

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 4 अध्याय 18: पृथु पृथ्वी दुहते

21 September 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



स्वयम्भुव मनु को बछड़ा एवं अपने ही हाथों की अंजलि को दोहन-पात्र बनाकर, राजा पृथु माता पृथ्वी से — जो अब एक कोमल गाय बनी है — उन अन्नों तथा ओषधियों को खींचते हैं जो प्रत्येक जीव को पोषित करेंगी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

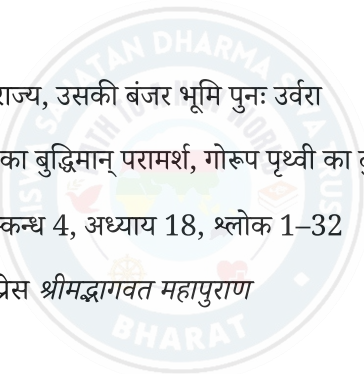
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गडम् में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में, अकाल ने भूमि को जकड़ लिया था, और राजा पृथु ने, अपना धनुष उठाकर, पृथ्वी देवी को — जिसने अपनी सम्पदा रोक ली थी — समर्पण तथा उनसे प्रार्थना करने को विवश किया। यह अष्टादश अध्याय वह मेल-मिलाप तथा उसका समृद्ध फल है। स्वयं को स्थिर कर,

पृथ्वी राजा को बुद्धिमान्नी से परामर्श देती है: वे उसे बल न दें, बल्कि उचित साधन जुटाएँ — एक उपयुक्त बछड़ा, एक पात्र, तथा एक दुहने वाला — और वह प्रसन्नता से वह सब देगी जो संसार को चाहिए। उसकी बात मानकर, पृथु पृथ्वी की ऊबड़-खाबड़ सतह को कृषि तथा निवास के लिए समतल करते हैं, और फिर, स्वायम्भुव मनु को बछड़ा तथा अपनी अंजलि को पात्र बनाकर, गोरूप पृथ्वी से प्रत्येक ओषधि तथा अन्न के बीज दुहते हैं। बदले में ऋषि, देवगण, पितर, सर्प, पर्वत, तथा प्रत्येक वर्ग के प्राणी उससे अपने-अपने योग्य पोषण को दुहते हैं। इस प्रकार संसार में समृद्धि लौटती है, और पृथु के न्यायपूर्ण शासन में सभ्यता फलती है। यह पृथ्वी से पोषण को केवल बल के बजाय विवेक तथा उचित व्यवस्था से खींचने का अध्याय है।

अध्याय की जानकारी

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 4 (चतुर्थ स्कन्ध)
- अध्याय: 18 (अष्टादश अध्याय)
- अध्याय का शीर्षक: राजा पृथु का गोरूप पृथ्वी को दुहना
- मुख्य वक्ता: महर्षि मैत्रेय, विदुर को अपने उपदेश की निरन्तरता में (जिसमें पृथ्वी देवी के वचन उद्धृत हैं)
- मुख्य श्रोता: विदुर
- मुख्य स्थल: पृथु का राज्य, उसकी बंजर भूमि पुनः उर्वरा
- केन्द्रीय विषय: पृथ्वी का बुद्धिमान् परामर्श, गोरूप पृथ्वी का दुहना, तथा संसार में समृद्धि की पुनर्स्थापना
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 4, अध्याय 18, श्लोक 1-32
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण



पिछले अध्याय का सन्दर्भ

अध्याय 17 ने बताया कि कैसे पृथु के राज्य में अकाल आया क्योंकि पृथ्वी देवी ने अपनी सम्पदा रोक ली थी, और कैसे राजा ने उस पर धनुष उठाया, जब तक वह गोरूप में भाग न गई, फिर मुड़कर समर्पण कर उनसे प्रार्थना की। यह अष्टादश अध्याय तब आरम्भ होता है जब पृथ्वी, अब भी राजा के क्रोध के समक्ष काँपती, स्वयं को सँभालकर उनसे पुनः बोलती है — इस बार बुद्धिमान् परामर्श के साथ।

पृथ्वी का बुद्धिमान् परामर्श

क्रोध से अब भी काँपते अधरों वाले राजा को प्रणाम कर, भयभीत पृथ्वी ने साहस बटोरकर स्वयं को धैर्यपूर्वक सम्भाला और फिर से वाणी दी, उनके समक्ष वह कारण प्रकट करते हुए जिससे उसने अपनी सम्पदा रोकी थी, तथा वह मार्ग जिससे वह पुनः दी जा सकती थी।

मैत्रेय उवाच

इत्थं पृथुमभिष्टूय रुषा प्रस्फुरिताधरम् ।

पुनराहावनिर्भीता संस्तभ्यात्मानमात्मना ॥ १ ॥

maitreya uvāca itthaṁ pṛthum abhiṣṭūya ruṣā prasphuritādharam punar āhāvanir bhītā samstabhyātmānam ātmanā

अर्थ: मैत्रेय ने कहा: इस प्रकार पृथु की स्तुति करके, जिनके अधर अब भी क्रोध से काँप रहे थे, भयभीत पृथ्वी ने अपने ही संकल्प से स्वयं को स्थिर किया और पुनः बोली। (स्कन्ध 4, अध्याय 18, श्लोक 1)



राजा के क्रोध के समक्ष स्वयं को स्थिर कर, पृथ्वी देवी पृथु को बुद्धिमानी से परामर्श देती है — कि उसकी सम्पदा बल से नहीं बल्कि उचित साधन से, एक उपयुक्त बछड़े तथा पात्र सहित, खींची जानी है (श्लोक 1-11)।

उसने विनम्रता से आरम्भ किया, स्वयं की तुलना उस भँवरे से करते हुए जो हर फूल से ज्ञान का सार बटोरता है: निर्धन भी, उसने कहा, उस बुद्धिमान् को कुछ सिखा सकता है जो सुनना जानता हो। मानव-जाति के चिरस्थायी कल्याण के लिए, उसने राजा को स्मरण कराया, प्राचीन महर्षियों ने पहले ही — श्रुति तथा स्मृति की जुड़वाँ साक्षियों में — वे साधन निर्धारित कर दिए हैं जिनसे मनुष्य इस लोक तथा परलोक दोनों में समृद्ध होता है; जो उनके परखे हुए मार्गदर्शन को अपनाता है, उसे जीवन का लक्ष्य सहज ही सिद्ध होता है (श्लोक 2-4)। किन्तु जो इसके विपरीत उनके परामर्श की उपेक्षा कर अपने ही साधन गढ़ता है, उसने चेताया, उसके प्रयत्न बार-बार विफल होंगे।

तान् अनादृत्य योऽविद्वानर्थानारभते स्वयम् ।

तस्य व्यभिचरन्त्यर्था आरब्धाश्च पुनः पुनः ॥ ५ ॥

tān anādṛtya yo 'vidvān arthān ārabhate svayam tasya vyabhicaranty arthā ārabdhāś ca punaḥ punaḥ

अर्थ: (पृथ्वी ने परामर्श दिया:) जो अज्ञानी बुद्धिमानों के निर्देशों की अवज्ञा कर अपने ही साधन गढ़ता है, उसके प्रयत्न बार-बार विफल होते हैं। (स्कन्ध 4, अध्याय 18, श्लोक 5)

तब वह अकाल के मूल में छिपी गहरी शिकायत पर आई। ब्रह्माजी ने संसार के लिए जो बीज तथा ओषधियाँ रची थीं, उसने कहा, उन्हें ऐसे लोग भोग रहे थे जिन्हें उस एक को देने वाले का कोई ध्यान न था — केवल इन्द्रिय-सुख के लिए ग्रहण किया गया, कभी पहले समस्त यज्ञों के स्वामी भगवान् को यज्ञ में अर्पित नहीं किया गया। ऐसा उपयोग, उसने कहा, सम्पूर्ण प्रजा को चोर बना देता है, जो कभी उनका नहीं था उसे हड़पते हुए; और चूँकि पृथ्वी के शासक इस चोरी को रोकने में असफल रहे, इसलिए उसने यज्ञ हेतु नियत उन्हीं बीजों को छिपा लिया था, जिससे वे व्यर्थ न गँवाए जाएँ (श्लोक 6-8)।

अपालितानादृता च भवद्भिलोकपालकैः ।

चोरीभूतेऽथ लोकेऽहं यज्ञार्थेऽग्रसमोषधीः ॥ ७ ॥

apālītānādṛtā ca bhavadbhir loka-pālakaiḥ corī-bhūte 'tha loke 'haṁ yajñārthe 'grasam oṣadhīḥ

अर्थ: (पृथ्वी ने आगे कहा:) अपने रक्षक राजाओं से उपेक्षित तथा असुरक्षित होकर, और जब संसार चोरी में परिणत हो गया, तब मैंने यज्ञ हेतु नियत उन्हीं बीजों को छिपा लिया। (स्कन्ध 4, अध्याय 18, श्लोक 7)

उसने कहा कि उन छिपे हुए बीजों को केवल महर्षियों तथा शास्त्रों द्वारा बताई गई मानक, कालपरीक्षित विधि से ही — न कि किसी तकनीक या हठ से — पुनः सुरक्षित रूप से निकाला जा सकता है।

फिर उसने राजा को अपना व्यावहारिक परामर्श दिया: वे एक उपयुक्त बछड़ा नियुक्त करें, ताकि स्नेह से उसका दूध — समस्त पौधों के बीज — प्रवाहित हो; वे एक पात्र तथा एक दुहने वाला जुटाएँ, और उसकी ऊबड़-खाबड़ सतह को समतल करें ताकि वर्षा भीतर समा सके और फसलें उग सकें।

पृथु पृथ्वी को समतल कर उसे दुहते हैं

उसके परामर्श को मानकर, पृथु ने पहले पृथ्वी की ऊबड़-खाबड़, टूटी सतह को अपने धनुष की नोक से समतल किया, पहाड़ियों तथा गड्ढों को तोड़ते हुए ताकि भूमि समतल हो जाए, कृषि, निवास, तथा वर्षा के संचय के योग्य। फिर, पृथ्वी के मधुर तथा हितकर वचनों को स्वीकार कर, उन्होंने स्वायम्भुव मनु को बछड़ा बनाया, और, अपनी अंजलि को पात्र बनाकर, गोरूप पृथ्वी से समस्त ओषधियाँ तथा अन्न दुहे।

इति प्रियं हितं वाक्यं भुव आदाय भूपतिः ।

वत्सं कृत्वा मनुं पाणावदुहत्सकलौषधीः ॥ १२ ॥

iti priyaṁ hitaṁ vākyaṁ bhuva ādāya bhūpatiḥ vatsaṁ kṛtvā manuṁ pāṇāv aduhat sakalauṣadhīḥ

अर्थ: पृथ्वी के इन मधुर तथा हितकर वचनों को स्वीकार कर, राजा ने स्वायम्भुव मनु को बछड़ा बनाया और उससे, अपनी अंजलि में, समस्त ओषधियाँ तथा अन्न दुहे। (स्कन्ध 4, अध्याय 18, श्लोक 12)



पृथ्वी के परामर्श को मानकर, राजा पृथु उसकी ऊबड़-खाबड़ सतह को अपने धनुष की नोक से समतल करते हैं, पहाड़ियों तथा गड्ढों को तोड़ते हुए ताकि भूमि समतल तथा कृषि व निवास के योग्य हो जाए (श्लोक 6-11)।

समस्त प्राणी अपना पोषण खींचते हैं

जो पृथु ने किया, वह उनके बाद अन्य समस्त वर्गों के प्राणियों ने भी किया, प्रत्येक ने अपने-अपने ढंग से। ऋषियों ने, बृहस्पति को अपना बछड़ा बनाकर, पृथ्वी से वेद तथा पवित्र ज्ञान दुहा; देवगण ने अमृत तथा तेज दुहा; पितरों ने अपनी आहुतियाँ; सर्पों ने अपना विष तथा आश्रय; पशु-पक्षियों ने अपने घास तथा अन्न; पर्वतों ने अपने खनिज तथा रत्न — प्रत्येक प्रकार के प्राणी ने, अपने उपयुक्त बछड़े तथा पात्र का प्रयोग कर, एक ही पृथ्वी से अपने योग्य पोषण को खींचा।

एवं पृथ्वादयः पृथ्वीमन्नादाः स्वन्नमात्मनः ।

दोहवत्सादिभेदेन क्षीरभेदं कुरुद्वह ॥ २७ ॥

evam pṛthv-ādayaḥ pṛthvīm annādāḥ svannam ātmanaḥ doha-vatsādi-bhedena kṣīra-bhedam kurūdvaha

अर्थ: इस प्रकार, हे कुरुश्रेष्ठ, पृथु तथा भोजन पर जीवित रहने वाले अन्य सब, प्रत्येक ने अपने बछड़े तथा पात्र से, पृथ्वी से अपने योग्य विविध पोषण दुहे। (स्कन्ध 4, अध्याय 18, श्लोक 27)



बदले में ऋषि, देवगण, पितर, तथा प्रत्येक वर्ग के प्राणी एक ही गोरूप पृथ्वी से, प्रत्येक अपने उपयुक्त बछड़े तथा पात्र से, अपने योग्य पोषण दुहते हैं (श्लोक 13-27)।

समृद्धि की पुनर्स्थापना

पृथ्वी के प्रति उनकी पितृवत् देखभाल ऐसी थी कि वह उनके नाम से जानी जाने लगी, पृथ्वी के रूप में, पृथु की पुत्री। और उनके न्यायपूर्ण तथा दूरदर्शी शासन में, अकाल जानने वाले संसार में समृद्धि लौटी। जहाँ भूमि बंजर तथा टूटी थी, वहाँ राजा ने अब गाँव, नगर, तथा पुर बसाए, अनेक प्रकार के दुर्ग, गोपालकों की बस्तियाँ तथा शिविरों सहित गोशालाएँ, खानें, और कृषि तथा पर्वतीय ग्राम — कभी जंगली रही पृथ्वी को एक फलती-फूलती प्रजा के योग्य घर में व्यवस्थित करते हुए।

ग्रामान् पुरः पत्तनानि दुर्गाणि विविधानि च ।

घोषान् व्रजान् सशिविरानाकरान् खेटखर्वटान् ॥ ३१ ॥

grāmān purāḥ pattanāni durgāṇi vividhāni ca ghoṣān vrajān sa-sibirān ākarān kheṭa-kharvaṭān

अर्थ: राजा ने गाँव, नगर, तथा पुर बसाए, तथा अनेक प्रकार के दुर्ग, गोपालकों की बस्तियाँ, शिविरों सहित गोशालाएँ, खानें, और कृषि तथा पर्वतीय ग्राम। (स्कन्ध 4, अध्याय 18, श्लोक 31)



पृथु के न्यायपूर्ण शासन में, अकाल जानने वाले संसार में समृद्धि लौटती है: समतल, उर्वरा पृथ्वी खेतों, गाँवों, तथा फलते-फूलते नगरों से खेल उठती है (श्लोक 28-32)।

इस प्रकार अष्टादश अध्याय संसार को पुनः पूर्ण बना समाप्त होता है — पृथ्वी तत्पर, भूमि फलदायी, प्रजा तृप्त, और सभ्यता एक धर्ममय राजा के अधीन व्यवस्थित, उन महान् यज्ञों के लिए तैयार जिन्हें अगला अध्याय कहेगा।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. जो बल से नहीं मिलता, वह उचित व्यवस्था से जीता जा सकता है। पृथु पृथ्वी को धमका सकते थे, किन्तु उसकी सम्पदा तभी लौटी जब उन्होंने बल त्यागकर उसका परामर्श स्वीकार किया — विनम्रतापूर्वक अपनी ही युक्ति गढ़ने के बजाय बुद्धिमानों के परखे हुए मार्गदर्शन को अपनाकर, तथा उसकी माँग पूरी कर: स्नेह जगाने हेतु एक बछड़ा, उपज रखने हेतु एक पात्र, तथा दुहने हेतु दो हाथ। विवेक वह प्राप्त करता है जो अकेला बल नहीं कर सकता (श्लोक 1-12)।
2. बुद्धिमानों के निर्देशों को मानें। पृथ्वी चेतावनी देती है कि जो बुद्धिमान मार्गदर्शन की अवज्ञा कर केवल अपने ही उपायों पर भरोसा करता है, वह बार-बार विफल होता है। परखे हुए विवेक के समक्ष विनम्रता ही सफलता का आरम्भ है (श्लोक 5)।
3. अन्न पहले दाता का है, ग्रहणकर्ता का नहीं। पृथ्वी की गहरी शिकायत केवल उपेक्षा नहीं अपितु चोरी थी: जो लोग केवल इन्द्रिय-सुख के लिए उसकी उपज भोगते हैं, बिना पहले भगवान् को यज्ञ में अर्पित किए, वे सम्पूर्ण समाज को चोर बना देते हैं, और उसे अपने बीज छिपाने पड़ते हैं। पृथु का उत्तर मशीन या चतुराई नहीं अपितु यज्ञ था — वह मानक, सनातन विधि — जिसके पश्चात् भूमि को समतल कर उसकी एक गाय की भाँति देखभाल की गई, ताकि वह पुनः प्रसन्नता से दे (श्लोक 6-12)।
4. प्रत्येक प्राणी का एक ही स्रोत से अपना उचित पोषण है। एक ही पृथ्वी से, प्रत्येक प्रकार का प्राणी वह दुहता है जो उसके योग्य है। एक भगवान् का प्रावधान इतना विशाल है कि सबको खिला सके, प्रत्येक को उसके स्वभाव के अनुसार (श्लोक 27)।
5. उत्तम शासन जंगल को घर में बदल देता है। पृथु के अधीन, बंजर भूमि खेत, गाँव, तथा फलते-फूलते नगर बन जाती है। धर्ममय अधिकार केवल एक प्रजा की रक्षा नहीं करता; वह एक ऐसा संसार रचता है जिसमें वे फल-फूल सकें (श्लोक 31)।

एक भाक्तेपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय के पिछले अध्याय का अनुसरण करने के ढंग में एक शान्त विवेक है। अध्याय 17 में हमने पृथु का अपनी भूखी प्रजा के लिए उग्र क्रोध देखा; यहाँ हम वह क्रोध किसी कहीं अधिक फलदायी वस्तु को मार्ग देता देखते हैं — उचित व्यवस्था का धैर्यपूर्ण कार्य। राजा का धनुष पृथ्वी को भयभीत कर सकता था, किन्तु वह एक भी बालक को खिला नहीं सकता था; उसके लिए सुनना, एक बछड़ा तथा पात्र जुटाना, भूमि समतल करना, स्रोत की एक गाय की भाँति देखभाल करना चाहिए था। यह वस्तुतः इस विषय पर एक दृष्टान्त है कि संसार में भला वास्तव में कैसे सिद्ध होता है। जोश तथा धर्मयुक्त क्रोध का भी स्थान है — वे हमें एक ऐसे अन्याय के प्रति जगाते हैं जिसे ठीक किया जाना चाहिए — किन्तु वे, अपने आप, एक रिक्त हाथ में अन्न नहीं रखते। वह धैर्यपूर्ण विवेक का कार्य है, उन लोगों के निर्देशों का विनम्रता से अनुसरण करने का जो जानते हैं, हड़पने के बजाय देखभाल करने का। अध्याय के हृदय का चित्र कोमल है: महाबली सम्राट्, जो एक क्षण पूर्व झुका धनुष धारण किए था, अब एक कोमल गाय से दूध पाने अपनी अंजलि जोड़ता है। बल स्वयं को पोषण की ओर झुका चुका है। और फल एक पूर्ण बना संसार है — समतल पृथ्वी, भरे अन्नागार, फलते-फूलते नगर। अध्याय हमसे कोमलता से पूछता है कि हमने अपने जीवन में कहाँ उसे बल से करने का प्रयत्न किया है जिसकी केवल देखभाल की जा सकती है, और हमें झुके धनुष को जुड़ी, ग्रहण करती अंजलि से बदलने का निमन्त्रण देता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, अपने जीवन के एक कोने में बल को देखभाल से बदलें। किसी ऐसे भले के विषय में सोचें जिसे आप केवल दबाव या इच्छाशक्ति से घटित करने का प्रयत्न कर रहे हैं — कोई सम्बन्ध, कोई आदत, कोई आशा — और पूछें कि उसे सचमुच किन “उचित साधनों” की आवश्यकता है: धैर्य, किसी अधिक बुद्धिमान् का परामर्श, छोटी बातों की विनम्र व्यवस्था। आज ऐसा एक पग उठाएँ, और उसे इन शब्दों के साथ भगवान् को अर्पित करें — “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, यह विश्वास करते हुए कि समृद्धि हड़पने से नहीं बल्कि देखभाल से आती है। और जब आप अपना अगला भोजन करें, तो रुककर स्मरण करें कि उसका प्रत्येक दाना, अन्ततः, भगवान् के प्रावधान से एक ही पृथ्वी से खींचा गया — और उन्हें एक क्षण कृतज्ञ धन्यवाद अर्पित करें जो समस्त प्राणियों को खिलाते हैं, प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार।

उपसंहार

चतुर्थ स्कन्ध का अष्टादश अध्याय राजा पृथु तथा पृथ्वी देवी के मेल-मिलाप को उसके समृद्ध फल तक ले आता है। राजा के क्रोध के समक्ष स्वयं को स्थिर कर, पृथ्वी उसे बुद्धिमानी से परामर्श देती है: उसकी सम्पदा बल से नहीं बल्कि उचित साधन से, एक उपयुक्त बछड़े तथा पात्र सहित, और उसकी ऊबड़-खाबड़ सतह को समतल करके, खींची जानी है। उसकी बात मानकर, पृथु ने पहले पहाड़ियों तथा गड्ढों को तोड़कर भूमि को हल चलाने योग्य समतल किया, और फिर, स्वायम्भुव मनु को बछड़ा नियुक्त कर तथा अपनी करतल-अंजलि को दोहन-पात्र बनाकर, गोरूप हुई पृथ्वी से हर ओषधि एवं अन्न का बीज खींच लिया। उनके पश्चात् ऋषि, देवगण, पितर, तथा प्रत्येक वर्ग के प्राणी ने भी, अपने-अपने उपयुक्त साधन से, अपनी प्रकृति के अनुरूप पोषण खींचा। अकाल जानने वाले संसार में समृद्धि लौटती है, और राजा गाँव व नगर बसाते हैं और पृथ्वी को एक फलती-फूलती प्रजा के लिए घर में व्यवस्थित करते हैं। इस प्रकार अध्याय सिखाता है कि पृथ्वी से पोषण केवल बल से नहीं बल्कि विवेक तथा देखभाल से खींचा जाता है — और एक धर्ममय राजा के अधीन संसार को पूर्ण बना समाप्त होता है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, पूर्ण), चतुर्थ स्कन्ध, अष्टादश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • बिश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान् पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिखाए गए हैं और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी भी प्रकाशक द्वारा किसी सम्बद्धता या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-4-chapter-18-king-prithu-milks-the-earth-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट